[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3594

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगों द्वारा रोगों का निदान – कम खर्चीली चिकित्सा पद्धति

डॉ. अंजना जैन
प्राध्यापक
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महा., किला भवन, इंदौर

शोध सारांश – *रंगों का हमारे मस्तिष्क, शरीर व भावनाओं पर गहरा असर पड़ता हैं। रंगों का असन्तुलन रोग का कारण होता है यदि रंगों की चिकित्सा विधि द्वारा इस असन्तुलन को दूर कर दिया ताय तो व्यक्ति स्वस्थ एवं रोग मुक्त हो सकता हैं। प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि रंग चिकित्सा प्रणाली क्या है ? क्या इससे रोग निदान हो सकता है ? क्या यह कम खर्चीली पद्धति है ? आदि बातों को जानने का प्रयास किया गया है।*

Key Word: - रंग चिकित्सा द्वारा रोगों का उपचार

1. प्रस्तावना –

रंग चिकित्सा वैकल्पिक चिकित्सा का एक रूप है। जिसमें मन और आत्मा को स्वस्थ करने के लिए प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। रंगों का हमारे मस्तिष्क और शरीर पर गहरा असर पड़ता है। रंगों की इसी ताकत ने इसे उपचार के लिए भी उपयोगी बना दिया है। कई सारी बीमारियों में रंग चिकित्सा का इस्तेमाल किया जाता है। रंगों द्वारा स्वास्थ्य व विकारों की वजह से हमारे भावनात्मक, शारीरिक और मानसिक स्तर पर हुए ऊर्जा असन्तुलन को बहाल करने का काम किया जाता है। हम प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के बहुत सारे रंग देखते है। प्रत्येक रंग हमारे मन पर अलग ढंग का प्रभाव डालता है जैसे – खुषी, उदासी, अवसाद, गम, शांति, क्रोध, जुनून आदि रंगों के इस्तेमाल द्वारा मन मस्तिष्क को संतुलित कर रोग का निदान करना ही रंग चिकित्सा है। जब हम ऊर्जा की कमी महसूस करते है, आत्म विष्वास में कमी पाते है। सोच स्पष्ट नही हो पाती तो रंग चिकित्सा हमारे लिए सहायक हो सकती है।

2. अध्ययन के उद्देष्य –

- रंग चिकित्सा की कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।
- व्यक्ति के आभा मंडल व मनोभावनाओं पर रंगों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- रंग चिकित्सा किन–किन बीमारियों में लाभ प्रद है अध्ययन करना।
- खर्च के आधार पर अन्य चिकित्सा पद्धतियों से तुलनात्मक अध्ययन।

3. आंकड़ों व तथ्यों का संकलन –

प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्य पर आधारित है जिसके संकलन प्रत्यक्ष साक्षात्कार करके, समूह चर्चा, दूरभाष पर चर्चा कर जानकारी एकत्रित की गई है। इस हेतु म.प्र. के कुल 200 चिकित्सा व अन्य विषेषज्ञों में से 25 विभिन्न रोगों के चिकित्सा विषेषज्ञों, 25 मनोरोगी विषेषज्ञों में से 25 आयुर्वेदाचार्यो को 25 होम्योपैथि विषेषज्ञों, 25 ज्योतिष्याचार्य व 25 रंग चिकित्सकों व 25 आहार विषेषज्ञों को, 25 वास्तुविद व प्राकृतिक चिकित्सा विषेषज्ञों को शामील किया गया है। तथा इनसे प्राप्त जानकारी के आधार पर निस्कर्ष निकाले गए। द्वितीयक तथ्यों का संकलन पुस्तकों–पत्रिकाओं में प्रकाषित लेख एवं इन्टरनेट से जानकारी एकत्रित की गई है।

4. अध्ययन से प्राप्त तथ्यों का विष्लेषण –

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से उद्देष्य के अनुसार म.प्र. के विषेष बीमारी के विषेषज्ञ चिकित्सकों, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक चिकित्सक, प्राकृतिक व मनोचिकित्सक वास्तुविद, ज्योतिण्य रंग चिकित्सकों से रंग चिकित्सा पद्धति की लाभ प्रदता, रंग चिकित्सा पद्धति से बीमारी दूर होने की स्थिति आदि तालिकाओं द्वारा विष्लेषण किया गया है।

5. सम्बंधित साहित्य का अध्ययन –

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

प्राकृतिक चिकित्सा विषेषज्ञ सोनलाल जी (1934) के अनुसार पृथ्वी पर जीवन के सभी रूपों के लिये ऊर्जा का सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत है सूर्य।[1] सूर्य की रोषनी में सात रंग पाए जाते है – 1. लाल 2. पीला 3. नारंगी 4. हरा 5. नीला 6. आसमानी 7. बैंगनी। सूर्य के प्रकाष का हम पर चिकित्सकीय प्रभाव पड़ता है। खासकर सर्दियों के दौरान हम देख सकते है कि धूप में हमारे शरीर की प्रत्येक कोषिका पर कितना अच्छा प्रभाव पड़ता है। दृष्य प्रकाष के पूरे स्पेक्ट्रम में सात प्रकार के रंगों का अलग–अलग तरंगदैर्ध्य होता है।[1] हल्के रंग की अपनी कंपन आवृति है और यह हमारे शरीर के अलग–अलग अंगों के साथ विषेष ढ़ंग से जुड़ा होने के कारण उन सब पर विभिन्न संयोजनों के साथ मिलकर विषेष प्रकार के प्रभाव डालता है।[2]
आयुर्वेदाचार्य श्री नित्येन्द्र आचार्य (2014) ने अपने अध्ययन में बताया कि प्राणियों का सम्पूर्ण शरीर रंगीन है। शरीर के समस्त अवयवों का रंग अलग–अलग है। शरीर की समस्त कोषिकाएँ भी रंगीन है। शरीर का कोई अंग रूग्ण (बीमार) होता है तो उसके रासायनिक द्रव्यों के साथ–साथ रंगों का भी असन्तुलन हो जाता है।[3] रंग चिकित्सा उन रंगों को संतुलित कर देती है जिसके कारण रोग का निवारण हो जाता है। स्वामी नित्यानन्द (1860–64) ने बताया कि आयुर्वेद की अनेक दवाईयों को शरद पूर्णिमा की चाँदनी में बनाई जाती है।[4] रत्न चिकित्सक आचार्य वल्लभ शास्त्री (1968) ने अलग–अलग रत्नों से निकलने वाली अलग–अलग रंगों की तरंगों के आधार पर उन रत्नों का शरीर के विषेष सीनों पर स्पर्ष करवाकर उसाध्य रोगों का उपचार करने का दावा करते है।[5] पुष्प चिकित्सक पुष्पा पंत (1964) अलग–अलग रंगों के पुष्पों के अर्क का उपचार हेतु दवा के रूप में उपयोग करते है।

आहार विषेषज्ञ डॉ. वन्दना शर्मा (2005) ने शरीर के अवयवों के असन्तुलन को दूर करने हेतु अन्य आवष्यक उपचारों के साथ–साथ उनको पुष्ट करने वाले रंगों के अनुसार सब्जियों, अनाज, खाद्य पदार्थ खाने का परामर्ष देते है।[6]
त्वचा रोग विषेषज्ञ डॉ. सुभाष शर्मा (2001) – यदि त्वचा के किसी भाग में हरापन आ गया है तो शरीर के उस भाग में वायु ऊर्जा का असन्तुलन होने की प्रबल सम्भावना रहती है यदि त्वचा लाल हो तो ताप ऊर्जा पीली हो तो नमी ऊर्जा मंद कान्ति होने पर शुष्क ऊर्जा नीली काली पड़ जाने पर ठण्ड ऊर्जा का असन्तुलन व्यक्ति में रोग का कारण हो सकता है।[7] अतः अभाव वाले अंगों में सम्बंधित रंगों की तरंगों को प्रवाहित किया जाये तो तुरंत स्वास्थ्य लाभ होता है।[8] वास्तुविद जोहान्स केप्लर (1957–1960) ने अपने अध्ययन में बताया कि शयनागार की दिवारों और खिड़कियों का रंग भी ठण्डी प्रकृति लाईट कलर का होने से निंद्रा अच्छी व गहरी आती है।[9] यदि कमरे में बल्ब लाल रंग का जल रहा हो तो निंद्रा बराबर नहीं आती। नेत्र रोग विषेषज्ञ डॉ. नाहटा (1994) के अनुसार धूप के चष्में नीले या हरे रंग के अधिक शांतिदायक होते है।[10] आयुर्वेदाचार्य रामजी भाई (1984) के अनुसार पगथली ठण्डी हो तो लाल मैजो का प्रयोग करना चाहिये। जोड़ों के दर्द वालो को लाल कपड़े पहनना चाहिये। चर्म रोगियों को हरे रंग के कपड़े लाभप्रद होते है। टोपी या हेलमेट के अंदर का भाग हरा रखने से मस्तिष्क शांत रहता है।[11] रंग चिकित्सक नित्येन्द्र आचार्य (2011–12) के अनुसार जब दो विरोधी रंग अच्छे लगते है तो व्यक्ति का रोग पुराना एवं जटिल हो जाता है।[12]

रंग चिकित्सा असर बोमारियाँ और इस्तेमाल से लाभ

क्रं.	रंग	असर	बीमारियाँ व इस्तेमाल से लाभ
1	लाल	जोश, ऊर्जा	हीमोग्लोबिन बढ़ता है शरीर में ऊर्जा पैदा होती है आयरन की कमी और खून से जुड़ी दिक्कतों में कमी आती है।
2	नारंगी	आशावाद, खुषी, आत्मविष्वास और सम्पूर्णता	कफ जकित खांसी, बुखार, निमोनिया, श्वास, क्षय रोग, एसिडीटी, फेफड़े संबंधित रोग, स्नायु दुर्बलता ह्रदय रोग, गठिया, लखवा, पाचन तंत्र के रोग में लाभदायक। यह रंग व्यक्ति को दिनभर खुष मिजाज रख सकता है। यह रंग जीवन में भूख पैदा करता है। भावनाओं से जोड़ता है। स्वतंत्र व सामाजिक बनाता है।
3	पीला रंग	समझदारी और स्पष्ट सोच	इस रंग का सबसे ज्यादा असर हमारे दिमाग व बुहिद पर पड़ता है। शोध में पाया गया है कि आंतो और पेट से जुड़ी गड़बड़ियों को दुरूस्त करने में यह रंग काम आता है।
4	हरा रंग	प्यार आत्म नियंत्रण और संतुलन	चर्म रोग, चेचक फोड़ा–फुंसी, दाद, खुजली, नेत्र रोगियों को आराम देता है। मधुमेह, रक्तचाप, सिरदर्द में लाभप्रद, हरे रंग में घावो को भरने की शक्ति होती है। इस रंग में आध्यात्मिक और शारीरिक दोनो तरह के प्रभाव डालने की क्षमता होती है यह रंग मसल्स को आराम देता है।
5	इडिगों	दिमागी संतुलन समझदारी	शरीर में जलन होना, लू लगना, आंतरिक रक्तस्त्राव, तेज बुखार, सिरदर्द, कम नींद आना, उच्च रक्तचाप, हिस्टीरियाँ, मानसिक विक्षिप्तता, टांसिल, गले की बीमारियाँ, मसूड़े फूलना, दांत दर्द, मूँह के छाले, पायरियाँ, घाँव, चर्म रोग, डायरिया, डिसेन्टरी, जीभ

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

			चलाना, उल्टी, हेजा, जहरीले जीव जंतु के काटने से फुड पायजनिंग आदि रोगों में लाभ पहुंचाता है। यह रंग पवित्रता की किरण है। इस रंग का संबंध आत्मा से होता है। आंख व कान से जुड़ी दिक्कतों को दूर करने में यह रंग सहायक है।
6	जामुनी	सुन्दरता और रचनात्मकता	यह रंग सिर्फ आध्यात्मिक स्तर पर काम करता है। जामुनी रोषनी के बीच यदि आप योग करें तो आपकी योग करने की षक्ति दस गुना बढ़ जाती है। यह रंग हमारे विचारों को षुद्ध करता है। इंसान को अंदर से मजबूत करने के साथ–साथ कलात्मक सोच को बढ़ावा देता है।
7	सफेद	षांति	सफेद अपने आप में पूर्ण रंग है। यदि सभी रंगों को एक चक्र बनाकर उसे तेजी से घुमाऐं तो आपको सिर्फ सफेद रंग ही नजर आएगा। यह रंग ष्षांति देता है एवं घाव को भरने में मदद करता है।

तालिका क्रं. 1
रंग चिकित्सा पद्धति की लाभप्रदता

क्रं.	रंग चिकित्सा	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
1	लाभप्रद है	161	80.5%
2	लाभप्रद नहीं है	39	19.5%

तालिका क्रं. 1 से स्पष्ट है कि 80.5% उत्तरदाता रंग चिकित्सा को लाभप्रद व 19.5% लाभप्रद नही मानते है। विष्लेषण से स्पष्ट है कि जो इसे लाभप्रद चिकित्सा नहीं मानते उनके अनुसार इसका उन्होंने या तो प्रयोग नहीं किया या उन्हें इसकी जानकारी नहीं है।

तालिका क्रं. 2
रंग चिकित्सा पद्धति व बोमारी का इलाज

क्रं.	बीमारी का प्रकार	सहमत	असहमत	कुल
1	शारीरिक बीमारियाँ दूर होती है	101 (63.35%)	60 (37.26%)	161 (100%)
2	मनसिक बीमारियाँ दूर होती है	102 (63.35%)	59 (36.64%)	161 (100%)
3	भावनात्मक रोग दूर होती है	142 (88.19%)	19 (11.80%)	161 (100%)

तलिका क्रं. 2 से स्पष्ट है कि 62.73% शारीरिक बीमारी 63.35% ने मानसिक व 88.19% ने भावनात्मक बीमारी दूर करने में रंग चिकित्सा के प्रति सहमति जताई, जबकि क्रमषः 37.26%, 36.64% व 11.80% ने इससे असहमति जताई। विष्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांष ने रंग चिकित्सा को बीमारी दूर करने की चिकित्सा पद्धति माना है जिन्होंने असहमति जताई उनका कहना था कि इससे बीमारी के प्रभाव को कम किया जा सकता है पर समाप्त नहीं किया जा सकता है।

6. **कम खर्चीली चिकित्सा पद्धति –** रंग चिकित्सा पद्धति एलोपेथी, आयुर्वेदिक व होम्योपैथी चिकित्सा की तुलना में बहुत ही कम खर्चीली चिकित्सा पद्धति है जहाँ उपरोक्त वर्णीत बीमारीयों में एलोपेथी व सर्जरी में हजारों से लाखों रू. खर्च होते है। आयुर्वेदिक व होम्योपैथी उससे कम खर्चीली किन्तु सबसे कम या नाम मात्र के खर्च ने इसके प्रयोग से बीमारी का निदान पाया जा सकता

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

है। इसको सूर्य के प्रकाष से क्रोमो थेरपी टार्च से, पानी के अलग–अलग रंगों की बोतलों से इसमें इलाज किया जा सकता है जिसका खर्च नाम मात्र का आता है।

7. **निष्कर्ष –** रंगों का संतुलन होते ही शरीर में रोग के बने रहने की सम्भावना नहीं रहती है। अतः एक अनुभवी रंग चिकित्सक को इस बात की गहरी जानकारी होना चाहिए कि किस बीमारी में किस रंग का कब कितना और कितनी देर तक इस्तेमाल किया जाना चाहिए, जिससे इलाज का वांछित असर प्राप्त होने की सम्भावना बढ़ सकती है। इसलिए अपने रंग चिकित्सक के चयन के पूर्व उसकी योग्यता, पूर्व अनुभव और प्रतिष्ठा आदि की पूरी सावधानी से जाँच–परख कर लेना आवष्यक है।
इस प्रकार रंग चिकित्सा एक कम खर्चीली अत्याधिक लाभकारी और शारीरिक मानसिक व भावनात्मक रोग के इलाज का धीरे–धीरे एक लोकप्रिय विकल्प बनता जा रहा है। वास्तव में रंग चिकित्सा एक जीवन जीने की कला और विज्ञान दोनो है।

संदर्भ सूची –

1. *लालजी सोहन – प्राकृतिक चिकित्सा 1934 पृ. सं. 13 प्रकाषन*
2. *वैद्य सावरक – आयुर्वेदिक चिकित्सा 1964 पृ. सं. 38 प्रकाषन*
3. *आचार्य नित्येन्द्र – रंग चिकित्सा के गुणकारी प्रयोग 2014 पृ. सं. 2*
4. *स्वामी नित्यानंद – आयुर्वेदिक चिकित्सा के गुणकारी प्रयोग 1968 पृ. सं. 26*
5. *शास्त्री वल्लभ – रत्न चिकित्सा 1968 पृ.स. 32*
6. *पंत पुष्पा – फ्लावर रेमेडिज 1964 पृ. 130*
7. *स्वामी निरजनानन्दजी – आभामंडल 2006 पृ. 47*
8. *डॉ. शर्मा सुभाष – त्वचा रोग और निदान 2001 पृ 104*
9. *जोहान्स केटलर – वास्तु शास्त्र 1957 पृ. 123*
10. *डॉ. नाहटा नरेन्द्र – नेत्र चिकित्सा लेख 1994 पृ. 2*
11. *भाई रामजी – नेचरोपैथी 198 पृ. 3*
12. *आचार्य नित्येन्द्र – रंग चिकित्सा के गुणकारी प्रयोग 2014 पृ. 2*